IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# उच्च माध्यमिक स्तर पर भुगोल विषय के षिक्षण में षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषीलता का अध्ययन

निर्देषिका

डॉ. एकता पारीक

प्राचार्य

प्रस्तुतीकर्ती

अनिता कुमावत

एम.एड.छात्रा

**सारांशः–**

षिक्षा षिक्षक एवं बालक के बीच की अनंत किया है। प्रारम्भ में षिक्षा षिक्षक केन्द्रित थी किन्तु वर्तमान ने षिक्षण पद्धति में परिवर्तन आया है।

विषयवस्तु को रोचक व प्रभावषाली ढंग से प्रस्तुत करने हेतु षिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्ययन में उच्च स्तर पर भूगोल विशय के षिक्षण में षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषीलता का अध्ययन किया है। जिसमें ⁄पथम समूह के 60 छात्रों को परम्परागत षिक्षण विधि के द्वारा पढाया गया तथा द्वितीय समूह के 60 छात्रों को षिक्षण अधिगम सामग्री से क्रियात्मक रूप में भूगोल विषय पढाया गया।

जिसके कारण इनकी उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृति में धनात्मक सह संबंध पाया गया है।

**मूल शब्द–** जयपुर के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र निजी विद्यालय और षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभाषीलता आदि।

**प्रस्तावनाः–**

किसी भी राष्ट्र की प्रगति समृद्धि व संस्कृति का मूलाधार षिक्षा ही होती है। षिक्षा ही वह ज्योति पुंज है, जो मानव मस्तिष्क के अधंकार को दूर करके मुक्ति का मार्ग दिखाती है। तथा समाज में कीर्ति का प्रकाष फैलाती है। साथ ही षिक्षा हमारी समस्याओं को सुलझा कर हमारे समस्याओं को सुलझा कर हमारे ज्ञान में विकास करती है। इसी प्रकार षिक्षा को ठीक से समझाने के लियें षिक्षक द्वारा विभिन्न साधनों का उचित प्रयोग किया जाता है। क्योंकि पाठ्य पुस्तक में परम्परागत सामग्रिया तो है ही एनिमेषन आदि नई सामग्री भी इसमें जुड गई। इन सामग्रीयों के माध्यम से सीखा ज्ञान न केवल छात्रों में उत्साह जाग्रत करता है वरन् सीखे हुयें ज्ञान को लंबे समय तक अपने स्मृति पटल में संजोए रखने में भी सहायक होता है। इससे छात्र व षिक्षक अधिगम सामग्री द्वारा पाठ्य सामग्री को रोचक माध्यम में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे न केवल छात्रों का ध्यान केन्द्रित होता है, बल्कि उन्हे उचित प्रेरणा भी देती है। चाहे वह वास्तविक वस्तु हो या चित्र चार्ट या अन्य कोई तकनीकी उपकरण सभी से छात्रों के मस्तिष्क में एक विंग का निर्माण होता है।

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण**

**उच्च माध्यमिक स्तरः–** उच्च माध्यमिक से तात्पर्य कक्षा 11वी व 12वी में षिक्षा ग्रहण करने वाले बालको से है। (राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 के अनुसार)

**षिक्षक अधिगम सामग्री की परिभाषाएंः–**

जेम्स के अनुसारः– ''श्रव्य–दृष्य ऐसे साधन है जिनका प्रयोग अधिगम को मूर्त वास्तविक तथा अधिग गतिषिल बनाने हेतु किया जाता है।

कार्टर ए.गुड के अनुसार कोई भी सामग्री जिसके माध्यम से षिक्षण प्रक्रिया को उद्दीप्त किया जा सके अथवा श्रग्णेन्द्रिय संवेदनाओं के द्वारा आगे बढाया जा सके वह षिक्षण सहायक सामग्री कहलाती है।

एलविन स्ट्राँग के अनुसारः– सहायक सामग्री के अन्तर्गत उन सभी साधनों को सम्मिलित किया जाता है, जिसकी सहायता से छात्रों की पाठ में रूचि बनी रहती ह तथा वे उसे सरलतापूर्वक समझते हुयें अधिगम के उद्धेष्य को प्राप्त कर लेते है।

षिक्षण अधिगम सहायक सामग्रीः– पाठ को ठीक से समझओं के लियें षिक्षक जिन–जिन सामग्रीयों का प्रयोग करता है। वचह षिक्षण सामग्री या षिक्षण अधिगम सहायक सामग्री (टीचिंग–लर्निंग एड्स) कहलाती है।

अध्ययन के चरः– प्रस्तुत शोध अध्ययन में चर के रूप में केवल षिक्षण सहायक सामग्री की प्रभावषीलता को ही लिया गया है।

शोध के उद्धेष्यः– उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल विषय के षिक्षण में षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषीलता का अध्ययन।

शोध परिकल्पनाः– उच्च माध्यमिक स्तर पर परम्परागत षिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढाने वाले विद्यार्थियों (नियंत्रित समूह) एवं प्रायोगिक षिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढायें गये विद्यार्थियों (प्रायोगात्मक समूह) की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

शोध विधिः– इस अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया ळै।

**शोध सीमांकन :–**

1. शोध कार्य अध्ययन माध्यमिक षिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा जयपुर शहर के 2 निजी विद्यालय में किया गया है।
2. शोध अध्ययन में कक्षा 11वी व 12 वी के छात्रों को लिया गया है।

**शोध न्यादर्षः–** प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर लिजे की दो निजी विद्यालयें के 120 विद्यार्थियों का चष्न यादृच्छिक विधि से कर दो समान समूहो में बाँटा गया है।

| क्र.सं. | समूह | छात्र संख्या |
|---|---|---|
| 1 | परम्परागत समूह | 60 छात्र |
| 2 | क्रियात्मक समूह | 60 छात्र |

**शोध उपकरणः–**

प्रस्तुत शोधो में अध्ययन के लियें 'स्वनिर्मित प्रष्नावली'' उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

(1) अभिरूचि परीक्षण (2) उपलब्धि परीक्षण

संख्यिकीय प्रविधियांः–

शोध में विष्वसनीय परिणाम निष्चित परिणाम निष्चित करने हेतु उच्च एवं विष्वसनीयपरिणाम निष्चित करने हेतु उच्च एवं विष्वसनीय सांयिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, तथा मध्यमान के अंतर की सार्थकता का प्रयोग किया है।

आंकडों का सारणीयन एवं विष्लेषण :–

परिकल्पना प्रमांक –01:–

परम्परागत षिक्षण विधि द्वारा भूगोल विषय पढायें गयें विद्यार्थियों एवं प्रायोगिक षिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढायें गयें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थ अन्तर पाया गया है।

| क्र. सं. | समूह | छात्र संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | अनुपात | सार्थकता अन्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | परम्परागत समूह | 60 | 36ण्58 | 2.96 | 6.6 | 1 प्रतिषत विष्वास |
| 2 | क्रियात्मक समूह | 60 | 41ण्2 | 4.59 | | पर सार्थक अन्तर |

परम्परागत एवं क्रियात्मक समूह के विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमषः 36.58 व 41.2 प्रमाणिक विचलन 2.96 तथा (मान 6.6) पाया है। यह मान 0.01 विष्वाास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है । अर्थात परम्परागत समूह एवं क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

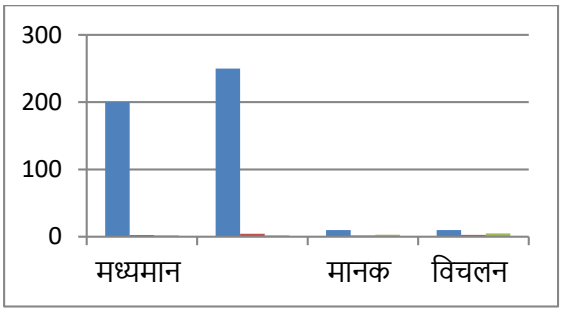


- परम्परागत समूह
- क्रियात्मक समूह

**परिकल्पना क्रमांक – 02:–**

परम्परागत षिक्षण विधि द्वारा ाूगोल पढने वाले विद्यार्थियों (परम्परागत समूह) एवं षिक्षण अधिगम सामग्री विधि द्वारा भूगोल पढने वाले विद्यार्थियों (क्रियात्मक समूह) की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

| क्र. सं. | समूह | छात्र संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | अनुपात | सार्थकता अन्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | परम्परागत समूह | 60 | 38ण्41 | 16.74 | 4.85 | 1 प्रतिषत विष्वास |
| 2 | क्रियात्मक समूह | 60 | 34ण्33 | 26.04 | | पर सार्थक अन्तर |

- मध्यमानों के अंतर की सार्थकता प्राप्त करने के लियें टी के मान की गणना की गयी।
- टी तालिका के अनुसार एक प्रतिषत विष्वास स्तर पर टी का मान 2.63 होना चाहियें लेकिन प्राप्त इससें अधिक है।
- अतः मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। इस अधार पर क्रियात्मक षिक्षण विधि से भूगोल अध्ययन करने वाले समूह और परम्परागत षिक्षण विधि से भूगोल अध्ययन करने वाले समूह की शैक्षिक अभिरूचि में अंतर हैं

**शोध निष्कर्षः–**

अतः स्पष्ट होता है कि परम्परागत समूह के बजाय क्रियात्मक समूह के छात्रों सम्भवतः अधिक शैक्षिक उपलब्धि का कारण अधिगम षिक्षण सहायक सामग्रीयों के प्रयोग व प्रभावषीलताओं महत्वपूर्णता है।

सुझावः– अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शैक्षिक संतुष्टि के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत कियें हैः–

1. भूगोल षिक्षण के लियें उचित शैक्षिक सामग्रियां विद्यालय में उपलब्ध होनी चाहियें। जिससें षिक्षक, षिक्षक कार्य में इनका उपयोग करते हुयें प्रभावी षिक्षण करायें।
2. नये उपकरणों के सृजन की ओर षिक्षकों को छात्रों के साथ प्रयास करने चाहियें।
3. षिक्षक हेतु क्रियात्मक/प्रायोगिक विधि का प्रयोग करना।
4. पाठ्यक्रम के साथ नयी–नयी विधियों का प्रयोग करवाना।

**संदर्भः–**

1. सिंह एन.एच. भूगोल षिक्षण (आगरा)
2. कपिल डॉ.एच.केः– अनुसंधान विधियां हरिप्रसाद भार्गव आगरा
3. हेमन्त कुमार कुडसेना– षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषाली का अध्ययन (रायपुर)